# राजस्थान में भाजपा का प्रारम्भ

पूजा प्रजापत, शोधार्थी
राजनीति विज्ञान विभाग
टांटिया विश्वविद्यालय,श्रीगंगानगर
राजस्थान

राजनीतिक दल आधुनिक प्रजातान्त्रिक समाजों (प्रतिनिध्यात्मक) में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। हूबर के शब्दों में कहा जा सकता है कि ''प्रजातन्त्रीय यन्त्र के संचालन में राजनीतिक दल तेल तुल्य है।'' राजनीतिक दल सत्ता पक्ष व विपक्ष के रूप में लोकतन्त्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत में दल व्यवस्था का बहुदलीय स्वरूप अपनाया गया है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् 1952 में सम्पन्न प्रथम आम चुनावों में 14 राष्ट्रीय दलों सहित कुल 53 दलों ने भाग लिया। स्वतन्त्रता आन्दोलन की पृष्ठभूमि में कांग्रेस दल एक सर्वमान्य व लोकप्रिय दल के रूप में उभरा और स्वतन्त्रता के पश्चात् भारतीय राजनीति में लम्बे समय तक एक प्रभुत्वशाली दल के रूप में एक छत्र शासन करता है। कांग्रेस दल के इस प्रभुतव को चुनौती देते हुए देश के दूसरे बड़े दल के रूप में भाजपा का उभरना तथा बहुत ही कम अवधि में राष्ट्रीय राजनीति के साथ–साथ राज्यों विशेषकर राजस्थान राज्य में महत्त्वपूर्ण प्रभाव व उपस्थिति कायम करना उत्सुकता एवं अध्ययन का विषय है।

वर्तमान की राजस्थान की राजनीति भाजपा व कांग्रेस दो दलों की प्रधानता वाली व्यवस्था है। यद्यपि यहाँ अन्य राष्ट्रीय दल SP, RCP, CPI, CPM तथा राज्यीय दल एवं अन्य दल सक्रिय है तथा अनेक बार सरकार निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेकिन राजस्थान राज्य की राजनीति मुख्य रूप से कांग्रेस एवं भाजपा के हाथों में ही केन्द्रित रही है।

6 अप्रैल 1980 में स्थापित भाजपा को पूर्व दल भारतीय जनसंघ का नवीन रूप तथा RSS का राजनीति संगठन कहा जाता है। डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का नेहरू के साथ विभिन्न मुद्दों पर मतभेद होने पर, मुखर्जी द्वारा विभिन्न RSS प्रचारकों एवं स्वयंसेवकों के साथ भारतीय जनसंघ का निर्माण किया गया। अपनी स्थापना के समय से ही जनसंघ दल राजस्थान प्रदेश में RSS के प्रचारकों एवं स्वयंसेवकों द्वारा क्रियाशील हुआ। RSS के सदस्य एवं प्रचारक भारतीय जनसंघ के सदस्य बने तथा RSS विचारधारा से प्रेरित ब्राह्मण–बनिया–राजपूत लोगों ने इसका समर्थन किया। राजस्थान प्रदेश में प्रादेशिक स्तर पर जनसंघ के संगठन एवं प्रचार–प्रसार का कार्य जनसंघ की प्रदेश यूनिट के अध्यक्ष श्री चिरंजी लाल मिश्रा, सचिव लालकृष्ण आडवानी तथा महामंत्री सुन्दर सिंह भण्डारी के नेतृत्व में प्रारम्भ किया। जिस पीढ़ी ने भारतीय जनसंघ को राजस्थान में स्थापित तथा संर्वधित किया और प्रचारित

किया। उसमें सुन्दर सिंह भण्डारी, भानू कुमार शास्त्री, जगदीश प्रसाद माथुर, हरिशंकर भाभड़ा, ललित किशोर चतुर्वेदी, भंवरलाल शर्मा, रघुवीर सिंह कौशल तथा सांवरमल का नाम उल्लेखनीय है। ये सभी व्यक्ति राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (RSS) के सदस्य एवं प्रचारक थे। राजस्थान में जनसंघ का प्रारम्भ मेवाड़ क्षेत्र आज का उदयपुर, कोटा बूँदी तथा जयपुर क्षेत्रों से होता है। तदन्तर इसका विस्तार चूरू, बीकानेर, नागौर आदि क्षेत्रों की ओर हुआ। जनसंघ का प्रारम्भिक फैलाव शहरी क्षेत्रों में तुलनात्मक रूप से शिक्षित व सम्पन्न लोगों में था तथा देहात में लगभग शून्य था।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के प्रारम्भिक वर्षों में राजस्थान की राजनीति में कांग्रेस दल का पूर्ण वर्चस्व था। प्रथम तीन चुनावों में जहाँ कांग्रेस पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता में थी। वहीं भारतीय जनसंघ ने एक महत्त्वपूर्ण विपक्ष की भूमिका का निर्वाह किया। भारतीय जनसंघ ने सुन्दर सिंह भण्डारी के नेतृत्व में चुनाव लड़े। 1952 के चुनाव में जनसंघ के 8 सदस्य, 1957 के चुनाव में 6 सदस्य तथा 1962 के चुनाव में 15 सदस्य विधानसभा में निर्वाचित हुए। इनका मत क्रमशः 5.93%, 5.55% तथा 9.14% रहा। 1967 के चुनावों में किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। कांग्रेस 89 तथा जनसंघ 22 स्थान प्राप्त करती है। भैरोंसिह शेखावत के नेतृत्व में जनसंघ अन्य विपक्षी दलों के साथ मिलकर सरकार बनाने का दावा प्रस्तुत करती है। लेकिन राज्यपाल उसे स्वीकार न कांग्रेस को सरकार निर्माण के लिए आमन्त्रित करते हैं। 1975 में राष्ट्रीय स्तर पर राजनीति में परिवर्तन होता है। वर्ष 1975 में आपातकाल की राजनीति में राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेसी विरोधी दलों ने जनता पार्टी का गठन किया। जिसमें भारतीय जनसंघ भी विलय हो गया। इसी राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में 1977 में सम्पन्न हुए छठी विधानसभा चुनावों में प्रदेश में कुल 200 स्थानों में से 151 स्थान प्राप्त कर जनता पार्टी ने बड़ी विजय प्राप्त की तथा जनसंघ के नेता भैरोंसिह शेखावत के नेतृत्व में सरकार का निर्माण किया। लेकिन यह सरकार अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाई क्योंकि 1980 के मध्यावधि आम चुनावों में इन्दिरा गांधी द्वारा पुनः पूर्ण बहुमत से सत्ता में आने के साथ ही राजस्थान विधानसभा को अन्य आठ गैर कांग्रेसी राज्य विधानसभाओं के साथ भंगकर चुनावों की घोषणा कर दी गयी। 1980 के आम चुनावों के तुरन्त बाद जनता पार्टी का बिखराव हो गया तथा दोहरी सदस्यता के सवाल पर भारतीय जनसंघ के सदस्यों ने जनता पार्टी से अलग होकर अप्रैल 1980 में भारतीय जनता पार्टी के नाम से नई पार्टी का गठन किया। राजस्थान में जगदीश माथुर की अध्यक्षता में नवगठित पार्टी का संचालन प्रारम्भ हुआ। जनता पार्टी में काम करने वाले भारतीय जनसंघ के कार्यकर्ताओं सुन्दरसिंह भण्डारी सम्पर्क रखते थे, उनका मार्गदर्शन करते थे। भण्डारी जी की सुझबूझ ही थी कि उन्होंने जनता पार्टी के शासन में युवा मोर्चा एवं जनता विद्यार्थी मोर्चा का बीजारोपण किया एवं युवा शक्ति जो मूलतः भारतीय जनसंघ के कार्यकर्ता थे उसे उन्होंने कायम रखने एवं दिशा देने की महत्ती भूमिका निभाई। जब जनता पार्टी टूटी और भाजपा की स्थापना हुई तब भाजपा को जनसंघ के कार्यकर्ताओं का सुस्पष्ट आधार पुनः प्राप्त हुआ और ये ही कार्यकर्ता भाजपा के प्रचार–प्रसार में जुट गए। वर्ष 1980 एवं 1985 के राज्य के विधानसभा व लोकसभा चुनावों में कांग्रेस सत्ता पाने में सफल

रही और भाजपा का प्रभाव एवं समर्थन का विस्तार हुआ। 1989 के लोकसभा चुनाव तथा 1990 के विधानसभा चुनावों में भाजपा ने जनता दल के साथ गठबन्धन किया तथा लोकसभा के सम्पूर्ण 25 स्थान तथा विधानसभा के 140 स्थानों पर सफलता हासिल की। जनता दल के सहयोग से भाजपा ने राज्य में सरकार का निर्माण किया जो अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पायी तथा 1993 में हुये मध्यावधि विधानसभा चुनाव में भाजपा 99 स्थानों के साथ सबसे बड़े दल के रूप में उभरी तथा स्वतन्त्र सर्मथकों के सहयोग से सरकार बनाने में सफल हुयी। भैरोंसिह शेखावत के नेतृत्व में राज्य के विकास के लिये सड़क, बिजली, पानी, गरीबी आदि के लिए अनेक कार्यक्रमों व योजनाओं का निर्माण एवं विकास किया गया। भैरोंसिह शेखावत के द्वारा चलायी गयी अन्त्योदय योजना अत्यन्त सुप्रसिद्ध रही। 1998 के विधानसभा चुनावों में भैरोंसिह सरकार के विकास कार्यों पर महंगाई, प्याज की बढ़ती कीमतें भारी रही तथा भाजपा चुनाव हार गयी। 200 सदस्य की विधानसभा में 197 स्थानों पर भाजपा ने 197 प्रत्याशी चुनाव में उतारे, जिनमें से 33 प्रत्याशी ही विजयी हुये। नवम्बर 2003 के 12वीं विधानसभा के चुनाव में वसुन्धरा राजे के नेतृत्व में भाजपा ने चुनाव लड़ा और 120 स्थान प्राप्त किए। इस बार भाजपा ने प्रदेश में प्रथम बार पूर्ण बहुमत के साथ सरकार का गठन किया तथा सफलतापूर्वक 5 वर्ष पूर्ण किए।

वर्ष 2004, मार्च–अप्रैल में सम्पन्न हुए चुनाव में यद्यपि राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा वाजपेयी के नेतृत्व में बहुमत प्राप्त कर सरकार बनाने में असफल रहती है, परन्तु राजस्थान प्रदेश में लोकसभा के निर्धारित 25 सीटों में से भाजपा 21 सीटों पर विजय प्राप्त की तथा 49.01 प्रतिशत मत प्राप्त किये।

2008 में 13वीं तथा 2009 में 15वीं लोकसभा चुनावों में भाजपा को विफलता का सामना करना पड़ा। विधानसभा चुनावों में भाजपा जहाँ 34.37 प्रतिशत मत प्राप्त करते हुए 79 स्थानों पर ही सिमट जाती है। वहीं लोकसभा चुनावों में राजस्थान में 36.57 प्रतिशत मतों के साथ 25 स्थानों में से मात्र 4 स्थान ही प्राप्त करने में सफल रही। टिकट का समय पर और उचित वितरण न होना, बागी नेतागण, गुटबाजी तथा कार्यकत्ताओं में असन्तोष आदि की वजह से भाजपा इन चुनावों में सत्ता पाने में विफल रही। अन्यथा चुनाव परिणामों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि भाजपा ने बहुत कम अन्तर में अपनी सीटें खोई। भाजपा एवं कांग्रेस को निर्वाचन में प्राप्त मतों का अन्तर मात्र 2.55 प्रतिशत ही रहा। अगले पाँच वर्ष भाजपा ने विपक्ष की भूमिका का निर्वाह किया। वर्ष नम्बर, 2013 में सम्पन्न 13वीं विद्यानसभा चुनावों में भाजपा ने अप्रत्याशित एवं अनैतिहासिक बहुमत प्राप्त किया। केन्द्र में वर्ष 2004 से लगातार कांग्रेस के नेतृत्व में यू.पी.ए गठबन्धन कार्यरत था जिसके कार्यकाल में जनता भ्रष्ट्राचार, अपराध, अव्यवस्था तथा महँगाई से त्रस्त थी। वर्ष 2014 के चुनाव के लिये भाजपा में प्रारम्भ में ही प्रधानमंत्री पद के लिये नरेन्द्र मोदी का नाम पेश किया, वहीं नरेन्द्र मोदी ने जनता को विकास मॉडल का सपना दिखाया। इसका प्रभाव नम्बर 2013 के प्रदेश के 13वीं विधानसभा के चुनावों पर पड़ा। सत्तासीन दल कांग्रेस के विभिन्न मन्त्रियों पर लगे अपराधिक आरोप, मंहागई तथा वसुन्धरा राजे के नेतृत्व मे संकल्प

यात्रा के परिणामस्वरूप भाजपा को प्रदेश के कुल 200 स्थानों में से 163 स्थान पर विजय प्राप्त हुई। भाजपा दो तिहाई बहुमत से सत्ता प्राप्त करने सफल रही।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि 1980 में भाजपा की पृष्ठभूमि जनसंध से सम्बन्धित है। जनसंघ द्वारा अन्य दलों के साथ कांग्रेस के वर्चस्व को चुनौती दी गई। भाजपा के गठन के बाद भाजपा ने प्रदेश की राजनीति को द्विदलीय व्यवस्था में परिवर्तित कर जनता के समक्ष कांग्रेस का विकल्प प्रस्तुत किया। ब्राह्मण–बनियों की पार्टी अथवा हिन्दु प्रधान कही जाने वाली भाजपा आज राजस्थान में लगभग समस्त वर्गों का समर्थन प्राप्त कर पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता में है।

सन्दर्भ सूचीः–

1. आहुजा, गुरदास (1996) भारतीय राजनीति में भाजपा का आगमन पृ.सं. 20

2. भाम्भरी, सी.पी. (2000) वी.जे.पी परिफरी टू सेन्टर पृ.सं. 15

3. कश्यप, डा. सुभाष (1980) दल–बदल एव राज्यों की राजनीति पृ.सं. 67

4. स्वामी प्रताप चन्द्र, (2001) भारतीय जनता पार्टीः प्रोफाईल एण्ड प्रर्फोमेन्स

5. लोढा संजय (2009) ''राजस्थान डिससेटिस्फेकशन एण्ड ए पुअर कैम्पन,''

6. दैनिक भास्कर

7. राजस्थान पत्रिका

8. इण्डिया टूडे

9. मरू कमल दर्पण, पृ.सं. 15

10. भाजपा प्रारूप प्रकोष्ठ–2012 व 2015